Roll No. ..... Total Pages: 03

2606

B. A./B. Ed. (Integrated) Second Year Examination, 2019

HINDI LITT. – II

(निबन्ध, नाटक एवं एकांकी)

Time: Three Hours

Maximum Marks: 80

Instructions –

Attempt **five** questions in all from the given units. The answer of essay type questions should not be more than **400** words and short answer type of questions in not more than **150** words. All questions carry equal marks.

निर्देश –

दी गयी इकाईयों में से प्रश्नों का चयन करते हुए कुल **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। निबन्धात्मक प्रश्न का उत्तर अधिकतम **400** शब्दों में और लघुत्तरात्मक प्रश्न का उत्तर अधिकतम **150** शब्दों में लिखिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

इकाई – I

कोई दो प्रश्न कीजिए (कोई भी दो गद्यांशों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए)–

प्र.1 (अ) ''वहीं जब चित्त आनन्द की लहरी से उद्वेलित हो नृत्य करता है और सुख की परम्परा में मग्न रहता है उस समय मुख विकसित कमल–सा प्रफुल्लित, नैत्र मानो हँसता–सा और अंग–अंग चुस्ती और चालाकी से फिरहरी की तरह फरका करते हैं। कंठ –ध्वनि भी तब बसंत–मदमत्त कोकिला के कंठ–रव से भी अधिक मीठी और सोहावनी मन को भाती है। मनुष्य के सम्बन्ध में इस अनुल्लंघनीय प्राकृतिक नियम का अनुसरण प्रत्येक देश का साहित्य भी करता है।''

(ब) राष्ट्र की तीसरी और अंतिम कड़ी लोगों की संस्कृति। बिना संस्कृति के जन शरीर मात्र है, आत्मा नहीं। यदि भूमि और जन से संस्कृति अलग कर दी जाये, तो राष्ट्र का लोप हो जायेगा। संस्कृति का विकास ज्ञान, कर्म तथा कला तीनों क्षेत्रों में होता है। भूमि पर रहने वाले जन ने ज्ञान के क्षेत्र में जो सोचा तथा कर्म के क्षेत्र में जो रचा–वही संस्कृति है।

(स) पराधीनता की एक परम्परा सी उनकी नस–नस में–उनकी चेतना में न जाने किस युग से घुस गयी है। उन्हें समझकर भी भूल करनी पड़ती है। क्या वह मेरी भूल नहीं थी जब मुझे निर्वासित किया गया तब मैं अपनी आत्म–मर्यादा के लिए कितनी तड़प रही थी और राजाधिराज रामगुप्त के चरणों में रक्षा के लिए गिरी; पर कोई उपाय चला? नहीं। पुरुषों की प्रभुता का जाल मुझे अपने निर्दिष्ट पथ पर ले ही आया। मन्दा! दुर्ग की विजय मेरी सफलता है या मेरा दुर्भाग्य, इसे मैं नहीं समझ सकी हूँ। राजा से मैं सामना करना नहीं चाहती। पृथ्वीतल से जैसे एक साकार घृणा निकाल कर मुझे अपने पीछे लौट चलने का संकेत कर रही है। क्यों, क्या यह मेरे मन का कलुष है? क्या मैं मानसिक पाप कर रही हूँ?

इकाई – II

कोई भी दो प्रश्न कीजिए–

प्र.2 (अ) ''साहित्य जन समूह के हृदय का विकास है'', निबन्ध में पं. बालकृष्ण भट्ट ने साहित्य से सम्बन्धित किन विचारों को व्यक्त किया है? निबन्ध के आधार पर समझाइये।

(ब) 'तुलसी के सामाजिक मूल्य'' निबन्ध में डॉ. रामविलास शर्मा ने तुलसीदास जी के पारिवारिक सामाजिक एवं धार्मिक विचारों पर प्रकाश डाला है। निबन्ध के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

(स) ''जाके प्रिय न राम वैदेही।

सो नर तजिए कोटि बैरी सम, जद्यपि परम सनेही ।

इन काव्य पंक्तियों में शुक्ल जी ने प्रभु श्री राम एवं धर्म को एक रूप ही मानते हुए धर्म की व्याख्या किस प्रकार से की है? समझाइये।

इकाई – III

कोई भी एक प्रश्न कीजिए–

प्र.3 (अ) 'ध्रुव स्वामिनी' नाटक की तात्विक समीक्षा कीजिए।

(ब) गद्यांश की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए–

''तोड़ो ये नुपुर। बनवीर की आग की कलियों ! तुम्हारे पीछे काली राख है – यह मत भूल जाना! ये अतृप्त इच्छाओं की चिंगारियाँ अधजल होकर चिटकेंगी और चित्तौड़ की आँखों में किरकिरी बनकर कसकेंगी। यह आग की ज्वाला हवन कुंड को भी जला देगी, सोना! इसे बुझा दो। तुम्हारे इस त्यौहार से चित्तौड़ परिचित नहीं है। यहाँ का त्यौहार आत्मबलिदान हूँ यहाँ का गीत मातृभूमि की वन्दना का गीत है। उसे सुनो और समझों।